बागवानी की संरक्षित खेती पर पाठ्यक्रम सम्पन्न

संरक्षित खेती द्वारा बागवानी फसलों की उत्पादकता बढाने एवं प्राकृतिक संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग विषय पर आईसीएआर नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित दस दिवसीय लधु पाठ्यक्रम 24 अक्टूबर को संस्थान में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीआईएएच बीकानेर के पूर्व निदेशक डॉ. ओ.पी. पारीक ने कहा कि विगत कुछ वर्षो में कृषि के रूप एवं स्वरूप में काफी बदलाव आया है। बढती जनसंख्या व घटती जमीन एवं पानी तथा मौसम के उतार चढाव से बचाव की स्थिति में नियंत्रित वातावरण में फल सब्जियों की खेती काफी लाभकारी होती है। पश्चिमी राजस्थान की जलवायु के लिए उपयुक्त एवं सरल बनावट के पॉली हाउस माडल उपलब्ध है। ग्राफटिंग तकनीकी से फलों के साथ-साथ सब्जियों में गुणवत्ता एवं उत्पादकता बढती है। संस्थान वैज्ञानिकों ने मरूभूमि के विकास में अनेक प्रौद्योगिकियां विकसित की तथा किसानों ने उसे अपनाया इससे रेतीले टीब्बों पर हरियाली आच्छांदित हुई।

पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. प्रदीप कुमार ने बताया कि टमाटर को बैंगन, जंगली टमाटर के मूल वृन्तों पर, खीरे को कद्दू, लौकी, तुराई पर ग्राफिंटक करने से उत्पादन अच्छा होता है। उन्होंनें पानी की बचत के लिए हाइडोपोनिकस के बारे में जानकारी दी। पाठ्यक्रम के दौरान 22 व्याख्यान एवं 6 प्रायोगिक प्रशिक्षण दिये। प्रतिभागियों को काजरी शोध क्षेत्रों, कृषि विवि जोधपुर एवं काजरी किसान मित्र रामचन्द्र एवं अजीत कुमार गुलेचा के खेतों पर पाली हाउस का भ्रमण करवाकर जानकारी दी तथा मरूस्थल की विभिन्न गतिविधियों, संस्कृति से भी रूबरू करवाया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अकथ ने बताया कि कर्नाटक, पंजाब, आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, उड़ीसा, राजस्थान राज्यों के 18 कृषि वैज्ञानिकों ने भाग लिया। प्रशिक्षणार्थी डॉ. सुखजीत कौर एवं डॉ. अर्जुन कुमार वर्मा ने पाठयक्रम को बहुत उपयोगी बताया। वैज्ञानिक डॉ. पीएस खापटे ने धन्यवाद ज्ञापित किया।